ज़ज्बे को सलाम

कोरोना में बिना थके जुटी हैं आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता

उदयपुर। कोरोना की दूसरी लहर में जहाँ डॉक्टर्स, नर्सिंगकर्मी और पुलिस अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं और हम सब अपने घरों में "लॉक" हैं, वहीँ हमारी आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता बहनें और आशा सहयोगिनियां हर एक गली- मोहल्ले की निगाहेबान बनी हुई हैं। बिना किसी शिकायत वे पिछले एक साल से भी ज्यादा वक़्त से हर एक बच्चे, गर्भवती एवं धात्री महिला के घर पहुँच कर उनके हाल- चाल पता कर रही हैं, उन्हें ज़रूरत का सामान पहुंचा रही हैं और बीमार होने की हालत में खुद की जान की परवाह किये बगैर उनका इलाज भी करवा रही हैं। वे छोटे बच्चों के परिवार वालों को RT-PCR टेस्ट करवाने और वेक्सीन लगाने के लिए भी प्रेरित कर रही हैं।

अर्बन95 कार्यक्रम की टीम ने इस दौरान जब आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं से बातचीत की तो पता चला कि ये महिला साथी लीक से हटकर अपने-अपने आंगनवाड़ी सर्वे एरिया में बच्चों की प्री स्कूल एज्युकेशन, टीकाकरण, उनके पोषण का पूरा ख्याल रख रही हैं, वहीँ अन्य लोगों की बेहतरी के लिए भी काम कर रही हैं। कई कार्यकर्त्ता बहनों ने अपने-अपने इलाके के केयरगिवर्स के मोबाइल व्हाट्सएप ग्रुप बना लिए हैं, जहाँ वे काम की बातें तो साझा कर ही रही हैं; साथ ही किसी घर में कोरोना के लक्षण मिलने पर तुरंत उनकी जांच के लिए भी आगे आ रही हैं। कुछ कार्यकर्त्ता बहनें स्थानीय डोनर्स की मदद से बच्चों के घर तक प्री-स्कूल सम्बंधित खेल सामग्री किट भिजवा रही हैं। कई ने खुद ही अपने अपने इलाके के बुजुर्गों का १००% वेक्सीनेशन करवाने का प्लान तैयार कर लिया है।

महिला एवं बाल विकास विभाग की बाल विकास परियोजना अधिकारी (CDPO- ICDS) उदयपुर शहर की श्रीमती संगीता शंकर गौड़ के अनुसार ये कार्यकर्त्ता बिना किसी "नाम" के चुपचाप अपनी जिम्मादेरी निभा रही हैं। ये कार्यकर्त्ता फिल्ड में कोविड नियमों का खुद भी पूरा पालन कर रही हैं और दूसरों को भी इसका पालन करवा रही हैं। सीडीपीओ संगीता के अनुसार ये कार्यकर्त्ता असली वारियर हैं, जो बिना घबराए काम किये जा रही हैं। उदयपुर शहर में कुल १५० आंगनवाड़ी केंद्र हैं।

वीडियो बनाकर भेजती है

पुलां आंगनवाड़ी केंद्र को अर्बन95 कार्यक्रम के पहले चरण में मॉडल केंद्र के रूप में विकसित किया जाना था। इसका पूरा डिजाइन तैयार था किन्तु कोरोना के चलते काम की शुरुआत नहीं हो पाई। यहाँ की कार्यकर्त्ता सज्जन देवी इस से बिलकुल निराश नहीं हुईं। वह अर्बन95 के प्रयासों से वाकिफ थीं और कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित हुई ट्रेनिंग में शामिल हो चुकी थीं। जब कोरोना आया और केंद्र बंद हो गए तो कार्यकर्त्ता सज्जन देवी खुद ही मोबाइल फोन पर छोटे छोटे गतिविधियों के वीडियो बनाकर उन्हें केयरगिवर्स को भेजने लगीं। इसके द्वारा वह उन्हें समझाती कि बच्चों को रंग, आकार, वज़न आदि का ज्ञान कैसे करवाया जाए और कविता या गीत के साथ गतिविधि कैसे की जाए। उनके अनुसार वीडियो से केयरगिवर्स को समझने में आसानी रहती है।

सज्जन कहती हैं कि अर्बन95 की ट्रेनिंग में हमने कबाड़ से जुगाड़ बनाना सीखा था। तब जाना था कि बेकार, अनुपयोगी और आसानी से घर में मिलने वाली वस्तुओं से छोटे बच्चों को सिखाने की बहुत सारी उपयोगी वस्तुएं बनायी जा सकती हैं। जब कोरोना आया तो लगा, यही ज्ञान शायद अब काम आये। अपनी सहेली की बेटी की सहायता से मैंने ऐसे ही छोटी छोटी खेल सामग्री और उसका उपयोग करने के वीडियो बनाये। ये वीडियो मैं अपने केंद्र से जुड़े केयरगिवर्स के व्हाट्सएप ग्रुप में भेजती हूँ। जब फिल्ड में टीकाकरण और गर्भवती एवं धात्री महिलाओं की जांच करने जाती हूँ तो ये भी चेक करती हूँ कि वे इन वीडियो को देख भी रहे हैं या नहीं !! जहाँ उन्हें दिक्कत आती है, वहां सहायता करती हूँ। सज्जन अब तक ऐसे १० से ज्यादा वीडियो बना चुकी हैं।

नेहरु बाज़ार और मीनापाडा केन्द्रों का अपना व्हाट्सएप ग्रुप

पुराने शहर के आंगनवाड़ी केन्द्र - नेहरु बाज़ार और मीनापाडा ने अपने अपने इलाके के केयरगिवर्स का व्हाट्सएप ग्रुप बनाया हैं। यहाँ की कार्यकर्त्ता दुर्गा शर्मा और नसीम एवं आशा सहयोगिनी सरोज कुमावत और दुर्गा रेगर साथ मिलकर समय-समय पर इस व्हाट्सएप ग्रुप में काम की बातें शेयर करती है। नसीम कहती हैं कि ग्रुप में वह हफ्ते में दो बार प्री स्कूल एक्टिविट'ज शेयर करती हैं, ताकि बच्चों के साथ उनके केयरगिवर्स घर पर प्री स्कूल गतिविधियाँ कर सके और उनका ख़ास ख्याल रख सके। दुर्गा जी हँसते हुए कहती हैं कि उन्होंने अर्बन95 की ट्रेनिंग में जो सीखा- वो अभी बहुत काम आ रहा हैं।

इन्ही ग्रुप में आशा सहयोगिनी स्वास्थ्य से जुड़ी ज़रुरी अपडेट्स भी साझा करती हैं। सरोज ने बताया कि इसी ग्रुप की सहायता से वो घर के बड़े सदस्यों को टीका लगवाने के लिए मनाती हैं। इसके लिए बाकायदा उन्होंने सबकी लिस्ट बनाकर टीका लगा है या नहीं- ये चेक भी किया है।

खुद सीलती हैं मास्क और फ्री में बांटती हैं

कमला नगर केंद्र की कार्यकर्त्ता नसीम बानो रोज़ सुबह जब घर से निकलती हैं तो इनके किट में खुद के सिले हुए कपड़े के मास्क पड़े होते हैं। नसीम कहती हैं कि इस दौरान उन्हें कोई भी महिला या बच्चा बिना मास्क नज़र आता है तो वह उन्हें मास्क लगाने के फायदे बताती हैं और उन्हें फ्री में मास्क देती हैं और साथ ही उन्हें कोविड-19 की दूसरी लहर से बचने के उपाय भी बताती हैं। वह बताती हैं कि खुद के सिले हुए मास्क जब वह बच्चों को पहने हुए देखती हैं तो उन्हें बहुत ख़ुशी मिलती हैं।

क्या है अर्बन 95- द्वितीय चरण कार्यक्रम

उदयपुर शहर में बर्नार्ड वेन लीर फाउंडेशन, नगर निगम, ICLEI साउथ एशिया और इकोरस इंडिया के साझे में संचालित अर्बन95 कार्यक्रम छोटे बच्चों और उनके केयरगिवर्स के लिए स्वस्थ, सुरक्षित शहर का समर्थन करता है। इसके अंतर्गत उदयपुर शहर के ढांचागत विकास में शुरूआती बचपन के विकास पर ध्यान देना, केयरगिवर्स को बच्चों के स्वास्थ्य- पोषण और आरंभिक बचपन से संबधित आवश्यक जानकारी देना और उदयपुर को इस ढंग से विकसित करना है, ताकि शहर बच्चों और उनके केयर गिवर्स के लिए सुन्दर, सुगम और सुरक्षित हो सके। पहले चरण में उल्लेखनीय प्रगति के बाद हाल ही में उदयपुर में अर्बन95 कार्यक्रम का दूसरा चरण आरम्भ किया गया है। प्रोजेक्ट मैनजमेंट यूनिट के तौर पर ज़मीनी स्तर पर छह लोगों की टीम काम कर रही है।

(रिपोर्ट : ओम ; सहयोग – युगल टाक एवं राहुल राठी)